International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.99-102

कोरोना काल में उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य

संतोष कुमार कुण्डारा*

सार

वैश्विक महामारी कोरोना ने जहॉ सम्पूर्ण विश्व को धरातल पर लाकर रख दिया था। उस समय मनुष्य जीवन में कई संकट उत्पन्न हो गये थें। उनमें से एक बड़ा क्षेत्र जो प्रभावित हुआ था वह था शिक्षा। लॉकडाउन की स्थिति में शिक्षण, मूल्यांकन आदि सभी कार्य पूर्णरूपेण बंद हो गये थे। बदलते जीवन के आयाम को ध्यान में रखकर उच्च शिक्षा के स्वरूप में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आये फलस्वरूप ऑनलाइन शिक्षा एवं डिजिटल युग का प्रारम्भ हुआ। जहॉ उचित शारीरिक दूरी बनाये रखने के साथ विधार्थी एवं शिक्षक के बीच शिक्षा को लेकर संवाद स्थापित हो पाया।

शब्कोशः *वैश्विक, लॉकडाउन, ऑनलाइन, डिजिटल।*

प्रस्तावना

किसी भी देश का विकास वहां की शिक्षा व्यवस्था पर पूर्ण रूप से निर्भर करता है। शिक्षा के द्वारा ही लोगों के मध्य उपस्थित सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के बीच की खाई को समाप्त किया जा सकता है। शिक्षा ही व्यक्ति को सभ्य, संस्कारवान, सुसंस्कृत बनाती है। शिक्षा तथा शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही जनशक्ति, जनमानस का विकास किया जा सकता है। शिक्षा के स्वरूप में गुरूकुल प्रणाली एवं आश्रम प्रणाली के माध्यम से शिक्षण कार्य अनवरत रूप से चलता रहा है। शिक्षा के माध्यम से जीवन के मूल्यों, प्रेम, सद्भावना, भाईचारा व आपसी एकता पर बल दिया जाता है। गुरूकुलीय शिक्षा के उपरान्त आज भारत में शिक्षा के प्रायः तीन स्तर है –

- **प्राथमिक शिक्षा**
- **माध्यमिक शिक्षा**
- **उच्च शिक्षा**

शिक्षा मूलरूप में समाज तथा व्यक्तित्व निर्माण करने की एक प्रक्रिया है। समाज का स्वरूप बदलने के साथ ही शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। कोरोना वायरस जो कि एक महामारी का रूप ले चुकी थी, का प्रभाव आज समूचे विश्व पर पड़ रहा है। दुनिया के सभी देश चाहे वे विकसित हो या विकासशील हो वे सभी इस वायरस की चपेट में आ चुके हैं। लॉकडाउन के कारण उनकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह से जूझ रही है। कोरोना वायरस की वजह से भारत में भी विश्व के अन्य देशों की भांति कर्फ्यू तथा सम्पूर्ण बंद की स्थिति आ गई थी। भारत में औद्योगिक जगत, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र इस वायरस के कारण पूरी तरह से प्रभावित हुआ, वह है – उच्च शिक्षा।

---

* सहायक आचार्य (भौतिक शास्त्र), स्व.प.न.कि.श.राज.महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान।

भारत जैसे अत्यधिक एवं घनी आबादी वाले देश में लॉकडाउन की वजह से उच्च शिक्षा में शिक्षण कार्य पूरी तरह से ठप हो गया। कोरोना वायरस के संक्रमण की भयावहता को देखकर सभी उच्च शिक्षण संस्थाओं के ताले लग गए। फलस्वरूप शिक्षण कार्य अपनी पटरी से नीचे उतर गया। बदलते हुए परिवेश में या इन बदली हुई परिस्थितियों में शिक्षण कार्य का एक नया स्वरूप सामने आया वह है – ऑनलाइन शिक्षा। कोरोना काल में संक्रमण के भय से शैक्षणिक संस्थाए पूरी तरह से बंद हो चुकी थी।

जिसके कारण विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय हो रहा था। लॉकडाउन की अनिश्चितता के कारण यह स्पष्ट नही हो पा रहा था कि विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य कब और कैसे व्यवस्थित तथा बिना किसी रूकावट के प्रारम्भ हो सकेगा। इसके साथ ही एक नवीन समस्या और उभर कर हमारे सामने आई कि लॉकडाउन समाप्त होने के पश्चात् क्या अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षण संस्थानों में शिक्षा हेतु नियमित रूप से भेजेगें या नही, क्योंकि लॉकडाउन कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने का एक अस्थायी कदम था। जिसके द्वारा संक्रमण की चेन को तोड़कर कोरोना को रोकने का प्रयास किया गया था। उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र व राज्य सरकार ने **"वर्क फ्रॉम हॉम"** की तर्ज पर शिक्षण कार्य करवाने का फैसला लिया। इसी के साथ भारत में कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ।

विद्यार्थियों को कम समय मे शारीरिक दूरी बनाए रखकर शिक्षा प्रदान करना ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। कोरोना काल में अनवरत शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सरकार एवं सभी राज्यों की सरकारों ने ठोस कदम उठाते हुए छात्रों को विभिन्न ऑनलाइन माध्यम जैसे – **जूम, गूगल मीट, गूगल क्लास रूम, यूट्यूब, व्हाट्सएप, माइक्रोसॉफ्ट टीम, सिस्को वेबेक्स** आदि के द्वारा ई–कन्टेंट मुहैया करवाकर ऑनलाइन क्लासरूम द्वारा अध्यापन करवाया गया। यूजीसी, विभिन्न सरकारी तथा निजी उच्च शिक्षा संस्थाओं एवं अन्य क्षेत्रीय संस्थाओं ने अपने एप्स एवं वेबसाइट को अपडेट किया तथा विभिन्न विषयों से संबंधित नोट्स एवं ई–क्लास मुफ्त में उपलब्ध करवाये।

जब भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने एक दिवसीय '**जनता कर्फ्यू**' की घोषणा की थी तो किसी ने भी यह नही सोचा था कि यह जनता कर्फ्यू अनिश्चितकालीन बंद (लॉकडाउन) में परिवर्तित हो जाएगा। जबकि इससे पूर्व ही भारत में सभी उच्च शिक्षण संस्थाओं में वार्षिक परीक्षाएं प्रारंभ हो चुकी थी। अचानक लगे लॉकडाउन के कारण विश्वविद्यालय की परीक्षा लंबे समय तक बाधित होने के कारण संपन्न न हो सकी, परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय हो गया। उक्त विषम परिस्थिति को ध्यान में रखकर केंद्र व राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों को उनकी अगली कक्षाओं में बिना परीक्षा लिए प्रमोट करने का निर्णय लिया परंतु माननीय उच्चतम न्यायालय ने केंद्र एवं राज्य सरकार के प्रमोट वाले फैसले पर आपत्ति दर्ज करते हुए बताया कि अंतिम वर्ष (डिग्री) के छात्रों को बिना मूल्यांकन के प्रमोट नहीं किया जावे।

अतः उक्त आदेश की अनुपालना में केंद्र एवं राज्य सरकारों ने भारत के सभी उच्च शिक्षण संस्थाओं में अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की परीक्षाएं करवाने का फैसला लिया। साथ ही बचे हुए विद्यार्थियों को उनकी अगली कक्षाओं में क्रमोन्नत करने का आदेश दिया। अब उच्च शिक्षा के जगत में नई समस्या यह उभरकर सामने आई कि कोरोना वायरस काल की विषम परिस्थितियों में महाविद्यालय में विद्यार्थियों की नियमित परीक्षा कब और कैसे संपन्न हो ? कोरोना गाइडलाइन की पालना करते हुए यह परीक्षा संपन्न करवाना भी अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इसी संदर्भ में राजस्थान उच्च शिक्षा संस्थानों ने परीक्षा आयोजन करवाने के संबंध में निम्न कदम उठाये –

- परीक्षा का समय पूर्व की तुलना में कम किया गया जिससे संक्रमण का खतरा कम हो सके।
- सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व पूर्णरूप से सैनिटाइज किया जाए तथा परीक्षा समाप्त होने के बाद उन्हें पुनः सैनिटाइज किया जाए। सैनिटाइज में समय लगने के कारण परीक्षा की दो पारियों के मध्य उचित समय रखा जाए।

- विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यार्थी परीक्षा कक्ष में 1 घंटे पूर्व उपस्थित हो, मास्क की अनिवार्यता, स्वयं की पानी की बोतल साथ में लाना आवश्यक है, प्रवेश द्वार पर अनिवार्य रूप से थर्मल स्कैनिंग प्रक्रिया से गुजर कर ही प्रवेश दिया जाएगा।
- शिक्षक के संदर्भ में शिक्षक परीक्षा कक्ष में मास्क एवं दस्ताने के साथ उपस्थित रहे तथा परीक्षा कक्ष में विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था उचित दूरी को ध्यान में रखकर की जावें।
- प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षार्थियों का मूल्याकंन प्रैक्टिकल रिकॉर्ड के आधार पर बिना विद्यार्थी को बुलाए किया जाए।

आज उच्च शिक्षा में कोरोना संकट के कारण बड़े परिवर्तन हुए हैं। विश्व के विभिन्न देशों जहां विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय हैं वहां पर क्लासरूम टीचिंग के विकल्प के रूप में डिजिटल शिक्षा विकसित हो चुकी है तथा हो रही है। भारत में डिजिटल शिक्षण पद्धति का एक अच्छा एवं गुणवतापूर्ण माहौल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकसित हो रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न एप्पस एवं पोर्टल को लांच किया गया जिससे हमारे छात्र, शोधार्थी एवं शिक्षक अपने ज्ञान में वृद्धि कर सके तथा इस कोरोना काल की परिस्थितियों का डटकर सामना कर सके।

ज्ञान तथा नये प्रयोगों को सक्षम एवं मजबूत हथियार के रूप में विकसित करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा डिजिटल शिक्षा के अनेक प्लेटफार्म विकसित किए गए और किए जा रहे हैं। 90 के दशक के बाद भारतीय उच्च शिक्षा में काफी बदलाव आये है। यह स्वयं को रूपांतरित करने के काम में लगी है। कोरोना संकट ने हमारे उच्च शिक्षा के व्यवस्थित ढांचे को बुरी तरह से प्रभावित किया है। कोरोना काल की विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्चुअल अध्ययन ही एक मात्र विकल्प रहा जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य दूरी होने के उपरान्त भी लगातार अध्यापन एवं अध्ययन कार्य से जुड़े रहे। हालांकि शिक्षा का यह स्वरूप एकदम नया था लेकिन नवीन होने के साथ ही यह रोचक, आकर्षक एवं प्रभावी रहा जिसने शिक्षण को एक नया आयाम प्रदान किया। आज न केवल विद्यार्थी बल्कि शिक्षकों का एक बहुत बड़ा समूह भी डिजिटल रूप में उपलब्ध साधनों में स्वयं को दक्ष बनाने में लगा हुआ है। कॉविड–19 से पैदा हुए संकट ने उच्च शिक्षा का पूरा ढांचा ही बदल दिया है इसके कारण देश में डिजिटल शिक्षा का समय तेजी से बढ़ा है। शिक्षण प्रक्रिया में नवीन एव उन्नत तकनीक एवं प्रौद्योगिकी का भी प्रयोग हो रहा है जिससे बेरोजगारी की समस्या का आंशिक समाधान भी संभव हो रहा है।

इन सब के बावजूद ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में कुछ परेशानियां उभरकर सामने आई जिनमें इंटरनेट कनेक्टिविटी, ई–कन्टेन्ट की क्वालिटी, वन–वे स्टडी प्रमुख रही। भारत देश की आबादी का अधिकांश हिस्सा ग्रामीण परिवेश में निवास करता है जहां आज तक भी इंटरनेट कनेक्टिविटी एक बड़ी समस्या के रूप में विद्यमान है। ऐसे में बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण कराना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। दूसरा गरीब परिवार के विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन की उपलब्धता भी एक जटिल समस्या हैं। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से प्रयोगशालाओं में वर्चुअल प्रैक्टिस पर भी अत्यधिक फोकस करना पड़ेगा।

आज शिक्षक एवं विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न उपकरणों के माध्यम से अध्यापन एवं अध्ययन का कार्य कर रहे हैं। लॉकडाउन के फलस्वरुप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विविध बदलाव देखे गए हैं जैसे ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में काफी तेजी आई और पुस्तकों व क्लास–बोर्ड का स्थान मोबाइल, लैपटॉप व अन्य उपकरणों के द्वारा प्रदान की गई शिक्षा ने ले लिया। शैक्षिक संस्थानों (आईआईटी, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों) की शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जिसके फलस्वरूप शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक भी ऑनलाइन शिक्षा को अपनाने लगें। आज इन सभी के परिणाम स्वरूप बड़े पैमाने पर आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव हो रहे हैं। उच्च शिक्षा में कोरोना काल के दौरान विद्यार्थियों को प्रभावी डिजिटल शिक्षण करवाने हेतु शिक्षक–दक्षता संवर्धन को लेकर कई कदम उठाए गए जिसमें **ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग प्रोग्राम, ऑनलाइन फैकल्टी डैवलपमेंट प्रोग्राम, ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स, ऑनलाइन इंडक्शन कोर्स और ज्ञान–गंगा प्रोग्राम** आदि

कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षकों को अध्यापन के क्षेत्र में ऑनलाइन टीचिंग की नवीन विधियां सिखाई गई ताकि वो ऑनलाइन अध्ययन करवाते समय विद्यार्थियों से प्रभावी संप्रेषण कर सके। शिक्षक का विषय वस्तु का ज्ञान और प्रभावी बन सके इसके लिए सेमिनार एवं संगोष्ठी का स्वरूप बदल कर वेबीनार का रूप लिया गया जिससे सभी ऑनलाइन आपस में जोड़कर विषय वस्तु के नवीन प्रतिमान से परिचित हो पाए।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् हम यह कह सकते है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जहां भारत में शिक्षण कार्य प्रत्यक्ष रूप से कक्षा कक्ष तक ही सीमित था वही कोरोना काल की विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ऑनलाइन शिक्षा का जन्म हुआ। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से घर पर बैठे हुए शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य शिक्षा का आदान–प्रदान हुआ। विद्यार्थियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाया गया। अभी इसी दिशा में और नवीन आयाम स्थापित करने की आवश्कता है जिससे उच्च शिक्षा अपने शिखर को प्राप्त कर सकें।

संदर्भ सूची

1. डॉ एस. पी. गुप्ता : शिक्षा का ताना–बाना, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
2. उमरेश कुमार : भारत में उच्च शिक्षा की दशा एवं चुनौतियां, सामान्य ज्ञान दर्पण।
3. प्रो. अशोक कुमार : संपादकीय लेख, राज. पत्रिका।
4. डॉ बद्री नारायण : संपादकीय लेख, अमर उजाला।

❖◆❖